ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 491-493

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16, YEAR- June -2020

महामारी का शिक्षा पर गंभीर वैश्विक प्रभाव

आशा बिष्ट

शोध अध्येत्री– राधा गोविन्द विश्वविद्यालय रामगढ़, (झारखण्ड) भारत

Received- 11.07.2020, Revised- 16.07.2020, Accepted - 21.07.2020 E-mail: -aaryvart2013@gmail.com

सारांश : हाल ही में ब्ट्प्व्.19 एक महामारी में बदल गया है और इसने हमारे भारतीय सामाजिक आर्थिक क्षेत्र के साथ–साथ शिक्षा क्षेत्र को भी प्रभावित किया है। सभी स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय, सभी सैदाणिक संस्थान COVID–19 के कारण लंबे समय से बंद रहे हैं, शिक्षण की पूरी प्रक्रिया को ऑनलाइन सौखने से बदल दिया गया है, इस पेपर के कुछ पहलुओं की जानकारी ऑनलाईन खोज एवं डेटा के रूप में विश्लेषण करता है. उच्च शिक्षा हेतू प्रवेश करने वाले लोगों की संख्या के संबंध में भारत के शिक्षा क्षेत्र के सामने आने वाली चुनौतियाँ और इस महामारी के कारण शिक्षा में बहोत सारे बदलाव हुये है. COVID–19 महामारी और आगामी लॉकडाउन ने लोगों के जीवन पर प्रतिकूल प्रभाव डाला है, विशेष रूप से मध्यम एवं गरीब परिवार में रहने वाले वर्गों की आजीविका पर इसका असर हुआ है, भोजन की कमी और स्वास्थ्य सेवाओं और शिक्षा तक पहुंच में व्यवधान के साथ, यह रिपोर्ट जून–जुलाई २०२० से जून २०२९ की अवधि के दौरान भारत के सभी राज्यों के COVID–19 के परिणाम के आधारित निगरानी (सीबीएम) का उपयोग करते हुए निष्कर्षों पर आधारित है। रिपोर्ट ने कमजोर आबादी की आवाजी को सामने लाया है, क्योंकि उन्होंने COVID–19 के कारण होने वाले व्यवधानों का अनुभव किया है। कमजोर परिवारों के बच्चों की स्कूली शिक्षा में बड़ा व्यवधान पड़ा है. COVID–19 महामारी और लॉकडाउन के मद्देनजर लगभग सभी स्कूल बंद रहे है, वर्ष 2020–2021 यह वर्ष ऑनलाइन कक्षाएं सीखने का मुख्य मार्ग बन गया है।, डिजिटल विभाजन ने गरीब और मध्यम वर्ग के परिवारों को प्रतिकूल रूप से प्रभावित किया है क्योंकी यह वर्ग स्मार्टफोन जैसे उपकरणों का खर्च नहीं उठा सकते थे और उनके पास डिजिटल साक्षरता की कमी थी।

कुंजीभूत शब्द– व्यक्तित्व एवं प्रतिभा, बहुआयामी, उद्देलित, राष्ट्रीय आन्दोलन, आभास, अज्ञानता, विचार।

COVID-19 एक संक्रामक बीमारी है और इस नाम का इस्तेमाल पहली बार WHO ने 11 फरवरी को किया था। 2020 यह गंभीर तीव्र श्वसन सिंड्रोम कोरोनावायरस (SARS-CoV-2) के कारण होता है। बुखार, खांसी, और सांस की तकलीफ इस बीमारी के सामान्य लक्षण हैं, चीन का शहर वुहान ही वह जगह है जहां कोरोना वायरस का पहला मामला सामने आया था, और 31 दिसंबर 2019 को WHO को इसकी सूचना दी गई थी। अब यह बीमारी पूरे देश में फैल गई है, काफी उच्च मृत्यु दर के साथ दुनिया में WHO द्वारा कोविद्र 19 को महामारी घोषित किया गया था।

भारत भी इस वैश्विक खतरे से अछूता नहीं है और दूसरा सबसे बड़ा देश बन गया था, कोरोना वायरस कई प्रकार के वायरसों में से एक है। Covid Disease अथवा कोरोना वायरस से संबंधित होने के कारण तथा वर्ष 2019 में इसकी उत्पत्ति होने के कारण इस वायरस का संक्षिप्त नाम कोविड 19 रखा गया। कोरोना वायरस का प्रभाव आज समूचे विश्व पर पड़ रहा है। दुनिया भर के लगभग 190 देश इसकी चपेट में आ चुके है, तथा अर्थव्यवस्था बुरी तरह जूझ रही है, हम धीरे एक वैश्विक मंदी कि तरफ बढ़ रहे है। इस वायरस की वजह से कितने देशों में लॉकडॉउन और कर्फ़्यू की स्थिति आ गई है। उद्योग जगत, सामाजिक आर्थिक क्षेत्र के साथ एक अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्र इस वायरस से बुरी तरह प्रभावित हो रहा है, और वो है उच्च शिक्षा का क्षेत्र। ऑनलाइन शिक्षा के नुकसान ऑनलाइन शिक्षा प्राप्त करने के लिए इंटरनेट की सुविधा होना परम आवश्यक है परन्तु देश में ऐसे असंख्य क्षेत्र अभी भी मौजूद है, जहां इंटरनेट की सुविधा उचित रूप से उपलब्ध नहीं है, ऐसे क्षेत्र मे ऑनलाइन शिक्षा निष्फल साबित होती है। ऐसे छात्र जिनके पास कुशल स्मार्ट फोन, कम्प्यूटर, लैपटॉप आदि नहीं है, वह छात्र ऑनलाइन शिक्षा पद्धति का पूर्णतः लाभ नहीं उठा पाते है। ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली के अन्तर्गत एक अध्यापक का महत्व कम होता नजर आता है, बच्चों के जीवन में वास्तविक शिक्षक की कमी होती है। स्कूल, कॉलेजों में जब छात्र छात्राएं आपस एक कक्षा में पढ़ते है तो उनके अंदर एक दूसरे से अच्छा प्रदर्शन करने की प्रतियागिता होती है, किन्तु ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली केअन्तर्गत बच्चा की प्रतियोगता का स्तर हो। ओनलाइन शिक्षा के लि विभिन्न लर्निंग ऐप तथा वेबसाइट्स इंटरनेट पर उपलब्ध है, परंतु छात्रों को उनके लिए एक उचित लर्निंग प्लेटफॉर्म टूटने में काफी असगंमा का सामना करना पड़ता है। ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली के अन्तर्गत बच्चों का पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित कर

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16, YEAR- June -2020

पाना बेहद कठिन होता है। ऑनलाइन कक्षाओं से बच्चों की सेहत पर भी पर असर पड़ता है, आंखे कमजोर होने लगती है। बड़े बच्चों में सर दर्द जैसे समस्याएं उत्पन्न होने लगती है।

स्कूल शिक्षा और उच्च शिक्षा– कोविड 19 ने राज्यों, वर्ग, जाति, लिंग और क्षेत्र में बड़ी संख्या में छात्रों को प्रभावित किया है। स्कूलों को एवं उच्च शिक्षा संस्थानों को बंद करने और पारंपरिक कक्षाओं को डिजिटल प्लेटफॉर्म पर स्थानांतरित करने का निर्णय न केवल बच्चों में द्य सीखने की असमानता को बढ़ा रहा है, बल्कि डिजिटल विभाजन के कारण बड़ी संख्या में बच्चों को स्कूल से बाहर कर रहा है। सीखने के अलावा, स्कूली शिक्षा की अनुपस्थिति का बच्चों के स्वास्थ्य और पोषण पर भी लंबे समय तक प्रभाव पड़ेगा। सभी के लिए समावेशी शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए मौजूदा स्थिति के साथ–साथ महामारी से परे बजट की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। इस संदर्भ में सीबीजीए ने काई के सहयोग से एक नीति का संक्षिप्त विवरण तैयार किया है। यह स्कूल बंद होने से जुड़े कुछ मुद्दों पर प्रकाश डालता है जिन पर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है। यह कुछ अल्प कालिक नीतिगत उपायों का भी सुझाव देता है जिन्हें आने वाले संघ और राज्य के बजट में लागू किया जा सकता है। हालांकि, यह नीती महामारी से उत्पन्न होने वाले मुद्दों को संबोधित करने तक सीमित नही होनी चाहिए, बल्कि इससे आगे भी होनी चाहिए।

दवितीय विश्व युद्ध के बाद कोरोना वायरस का प्रकोप दुनिया के सामने एक बड़ा संकट है। इस संकट ने मानव जीवन के सभी पहलुओं को प्रभावित किया है। इसलिए, लॉकचाउन नीति के आधार पर सभी देशों में इस बीमारी को नियंत्रित करने का प्रयास किया जा रहा है। इस स्थिति से पैदा हुई अनिश्चितता ने दुनिया भर में भय का माहौल बना दिया है। वैश्विक और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था मंदी और बेराजगारी से पीड़ित है। स्थिर अर्थव्यवस्था के कारण गरीब से गरीब व्यक्ति शहर से ग्रामीण इलाकों में चला गया और मर गया। दुनिया युद्ध के भय से घिरी हुई है। वैश्विक शक्ति के कैंट यूरोपीय अमेरिकी महाद्वीप से एशियाई महाद्वीप में स्थानांतरित हो रहे हैं। लॉकटाउन ने शून्यता और अकेलेपन को जन्म दिया है, जिससे परिवार, सामाजिक और मानसिक स्वास्थ्य समस्याएं पैदा हो रही है।

कई देशों ने कोरोना महामारी को रोकने के लिए शैक्षणिक संस्थानों को बंद कर दिया है। यूनेस्को की एक रिपोर्ट के अनुसार, अप्रैल 2020 में कई देशों के लाखों छात्र घर पर थे। भारत में स्कूल, कॉलेज बंद है। परिणामस्वरूप, 25करोड़ छात्र और 89 लाख शिक्षक पर बैठे हैं, जबकि 50,000 उच्च शिक्षा संस्थान बंद है और 3.70 करोड़ छात्र और 1.5 लाख कॉलेज द्य शिक्षक घर पर बैठे हैं। 30 जनवरी को भारत में कोविड–19 का पहला मामला केरल में पाया गया था। सभी छात्र वुहान से लौट रहे थे तब से 4 मार्च को भारत में 22 नए मामले सामने आए है, जिसमे एक इटालियन पर्यटक समूह के 14 संकमित सदस्य शामिल है। महामारी तब कई राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में फैल गई, शैक्षिक और व्यावसायिक प्रतिष्ठान अस्थायी रूप से बंद हो गए और सभी पर्यटन और परिवहन सेवाएं महामारी अधिनियम, 1897 के मानव संसाधन मंत्रालय की 2016–17 की रिपोर्ट के अनुसार, भारत में 11.3 करोड़ बच्चे सार्वजनिक स्कूलों में पढ़ रहे हैं। इस कठिन परिस्थिति में, सरकार ने स्कूल और कॉलेज स्तर पर छात्रों को प्रोत्साहित करने के लिए ई–लर्निंग कि तकनीक अपनायी। इस उन्नत पहल को छात्रों और उनके माता–पिता से भारी प्रतिक्रिया मिली है। इस प्रकार डिजिटल शिक्षा शिक्षण अंतर को भरने के लिए सबसे कुशल और विश्वसनीय तरीका बन गई, जब तक कि पूरे देश से इस संक्रामक बीमारी का उन्मूलन नहीं हो जाता ।

ई–लर्निंग शिक्षा प्रणाली– ई–लर्निंग में सभी प्रकार के शैक्षिक तरीके और उपकरण शामिल है, जहां कंप्यूटर और इंटरनेट सहित नई इलेक्ट्रॉनिक तकनीकों द्वारा ज्ञान और कौशल को स्थानांतरित करने की प्रक्रिया प्रदान की जाती है। ई–लर्निंग प्रक्रिया में मल्टीमीडिया सामग्री, एनीमेशन, वीडियो और ऑडियो स्ट्रीमिंग के माध्यम से वेब आधारित सीखने, कंप्यूटर आधारित सीखने और सीखाने शामिल है। ई–लर्निंग के विभिन्न प्रकार है।

डिजिटल लर्निंग सिस्टम– शिक्षा का प्रसार, शिक्षा का विस्तार, शैक्षिक गुणवत्ता बढ़ाने, शैक्षिक अवसरों में वृद्धि करने में सूचना प्रौद्योगिकी की बहुत गुंजाइश है। ट्राई की एक रिपोर्ट के अनुसार, 2020 तक, भारत में इंटरनेट उपयोगकर्ताओं की संख्या लगभग 68 करोड़ होगी। मोबाइल फोन उपयोगकर्ताओं की संख्या लगभग 4 करोड़ है, जबकि इंटरनेट उपयोगकर्ताओं की संख्या लगभग 40 करोड़ है। टीवी दर्शकों की संख्या 76 करोड़ है। हालांकि इस सूचना प्रौदयोगिकी का विस्तार हुआ है, लेकिन भारी असमानताएं हैं। भारत में, 52: आबादी इंटरनेट का उपयोग करती है। इसका मतलब यह है कि आधे भारतीय इंटरनेट के लाभ से वंचित है। विभाग को घर बैठे छात्रों के लिए इन चौनलों का उपयोग करने के बारे में कुछ कदम उठाने की आवश्यकता है।

ई–लर्निंग शिक्षा प्रणाली के कुछ संभावित दुष्प्रभाव– छोटे शहर और ग्रामीण ग्रामीण स्कूलों में शिक्षक कम कमाते है इस वजह शिक्षकों को ऑनलाइन पढ़ाने पर बच्चों पर कम ध्यान देने की संभावना

ए ड्डीवीसपएष्ट्ट्य उचवसमए व – ड्डीवीसप ।;2021द्ध पउचंबज

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16, YEAR- June -2020

है, क्योंकि कई शिक्षको को लॉकडाउन में वेतन भी नहीं दिया गया।

अधिकांश स्कूलों में बुनियादी सुविधाएं नहीं है। इसलिए उनमें से अधिकांश को कंप्यूटर शिक्षा और अन्य सुविधाए नही मिलती है।

इस महामारी में अधिकांश शिक्षकों को कंप्यूटर का ज्ञान नहीं है। छात्रों को ऑनलाइन पढ़ाने में असमर्थ है।

- शैक्षिक योजना, पर्यवेक्षण और नियंत्रण का अभाव।
- ई–लर्निंग सामग्री और सेवाओं के उपयोग के बारे में ज्ञान की कमी।
- जिन छात्रों के माता पिता अशिक्षित है, उन्हें ऑनलाइन कक्षाओं तक पहुंचना मुश्किल है क्योंकि बहोत
- स्कूली में कंप्यूटर पाठ्यक्रम या कौशल नहीं सिखाया जाता।
- ग्रामीण क्षेत्रों में अपर्याप्त बिजली आपूर्ति और इंटरनेट सेवा।

ई–शिक्षा प्रणाली के कुछ लाभ– शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाता है: ऑनलाइन शिक्षण कंप्यूटर आधारित अनुकूलन परीक्षण प्रदान करता है और वैकल्पिक शिक्षण और विचारों का बढ़ावा देता है।

एक प्रभावी ऑनलाइन शिक्षण वातावरण छात्रों का उच्च स्तर की सोच की ओर ले जाता है,

सक्रिय छात्र भागीदारी को प्रोत्साहित करता है, और शिक्षा की समय गुणवत्ता को बढ़ाता है। देव–आधारित शिक्षण सक्रिय और स्वतंत्र शिक्षा को बढ़ावा देता है।

- शिक्षा की लागत को कम करता है: छात्र दवारा किए गए खर्चों जैसे किताब, परिवहन व्यय आदि व्यय बचाता है।
- सर्वशिक्षा अभियान
- समय की बचत. ऑनलाइन शिक्षण प्रणाली के माध्यम से सीखना कजी भी कही भी हो सकता है. लिये समय की बचत होती है।

उद्देश्य– प्रस्तावित अध्ययन केंद्रित है जिनमें दो बहुत महत्वपूर्ण मुद्दों पर से पहला मुद्दा संबंधित है। कोविड 19 स्थिति और संबंधित दूसरा मुद्दा शिक्षा पर प्रभाव से संबंधित है। इस प्रकार इस अंश का विश्लेषण करने के लिए अनुसंधान कार्य, निम्नलिखित उद्देश्यों को परिभाषित किया गया है।

- स्कूल शिक्षा पर ब्टप्क 19 के प्रभाव का अध्ययन करना
- कोविड 19 का निम्न वर्ग के परिवार पर अधिक प्रभाव पड़ेगा न कि उच्च आय वर्ग या उच्च वर्ग परिवार पर।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Pravat Ka Jena (2020) Online learning dur ing lockdown period for Covid-19 in India. International Journal of educational re search 9(5) Pg. 82-92.
2. Migra Kamlesh (2020) Covid-19 negative impact and opportunities created for edu cation: retrived from hdttps:// www.indiatoday.in/educationtoday / teaturephilia/story/Covid-19.4 negtive impacts and-4 opportunities created for education 1677-206
3. MHRD notice (2020) Covid-19 staysafe-digital initiatives.retrived from https://www.mohfw.gov.in/pdf/Covid-19 pdf.
4. WHO (2022) WHO coronavirus (Covid-19) dashboard, World Health Organisation Covid-19 who.int
5. Unicef (2020). education and covid-19 data.unicef org/topic/education and covid-19.
6. Kaya (H) (2020) Investigation of the effect of online education on eye health 10 covid-19
7. pandemic international journal of assess ment tools in education 7(3) 488-496 DOI 10.21449 IJate ; 788078
8. of online education on student learning during the pandemic, studies in learning and teaching 2(2), 1-11 https:// doi.org/10-46627/silet.V 212.65
9. Son C, Hyed, S. Smith A, Wang X (2020) effect of Covid-19 on college students mental health in the United States Inter view survey study, Journal of medical Internet Research 22(9) https://doi.org/10.21 96/21279

*****